शीर्षक:

बैतुलमक़्दिस की दस विशषताएं

إن الحمد لله نحمده ، ونستعينه، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا ومن سيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمدا عبده ورسوله.

(يا أيها الذين آمنوا اتقوا الله حق تقاته ولا تموتن الإ وانتم المسلمون)

(يا أيها الناس اتقوا ربكم الذي خلقكم من نفس واحدة وخلق منها زوجها وبث منهما رجالا كثيرا ونسـاء واتقوا الله الذي يتسائلون به والارحام إن الله كان عليكم رقيبا)

(يا أيها الذين آمنوا اتقوا الله وقولوا قولا سديدا يصلح لكم اعمالكم ويغفر لكم ذنوبكم ومن يطع الله ورسوله فقد فاز فوزا عظيما)

प्रशंसाओं के पश्चात!
सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है एवं सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है।दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्कारित बिदअ़त(नवाचार)है और प्रत्येक बिदअ़त गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

- ए मुसलमानो!में तुम्हें और स्वयं को अल्लाह के तक़्वा(ईश्वर भक्ति) की वसीयत करता हूं,यह वह वसीयत है जो अल्लाह ने पूर्व और पश्चात के समस्त लोगों को की है: (وَلَقَدْ وَصَّيْنَا الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَإِيَّاكُمْ أَنِ اتَّقُوا اللَّهَ)

अर्थात:निसंदेह हमने उन लोगों को जो तुम से पूर्व पुस्तक दिए गए थे और तुम को भी यही आदेश दिया है कि अल्लाह से डरते रहो।
अल्लाह का तक़्वा(धर्मनिष्ठा)अपनाएं और उससे डरते रहें,उसकी आज्ञाकारिता करें और उसके अवज्ञा से बचते रहें,जान लें कि अल्लाह तआ़ला ने अपनी हि़कमत(निती) से कुछ समय को कुछ पर प्राथमिकता दी है,जैसे कुछ देवदूतों को कुछ देवदूतों पर प्राथमिकता दी है,बाज पुस्तकों को बाज पर वरीयता प्रदान की,बाज पैगंबरों को बाज पर प्राथमिकता दी,बाज समयों और बाज स्थान को बाज पर वरीयता प्रदान की है,इसका एक उदाहरण यह है कि पवित्र भूमि जिसमें बैतुलमक़्दिस और उसके इर्द गिर्द का छेत्र भी शामिल है,गोया अन्य स्थानों पर प्राथमिकता प्रदान की है,यह अल्लाह की हि़कमत(निती) और उसके सूक्ष्म चयन का परिनाम है,

(وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَيَخْتَارُ مَا كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ)

अर्थातःआपका रब जो चाहता है पैदा करता है और जिसे चाहता है चुन लेता है,उनमें से किसी को कोई अधिकार नहीं।

बैतुलमक़दिस का अर्थ हैःवह घर जो बहुदेववाद के प्रत्येक अभिव्यक्तियों से पवित्र है।

- ए अल्लाह के बंदो!बैतुलमक़दिस की दस विशेषताएं हैंः

1.**प्रथम विशेषताः**अल्लाह तआ़ला ने क़ुरान मजीद में इसे बरकतवाला घोषित किया है,अल्लाह का कथन हैः

(سُبْحَانَ الَّذِي أَسْرَى بِعَبْدِهِ لَيْلًا مِنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ إِلَى الْمَسْجِدِ الْأَقْصَى الَّذِي بَارَكْنَا حَوْلَهُ)

अर्थातःपवित्र है वह अल्लाह तआ़ला जो अपने बंदे को रात ही रात में मस्जिदे ह़राम से मस्जिदे अक़्सा तक लेगया जिसके आस.पास हमने बरकत दे रखी है।

क़ुदस वह स्थान है जो मस्जिद के अंदर है।

2.बैतुलमक़दिस की एक विशेषता यह है कि अल्लाह तआ़ला ने मूसा अलैहिस्सलाम की जुबान से इसे **मुक़द्दस**(पवित्र) अर्थात **मोतह़िहर** (पवित्र भूमि)बतलाया हैः

(يَا قَوْمِ ادْخُلُوا الْأَرْضَ الْمُقَدَّسَةَ الَّتِي كَتَبَ اللَّهُ لَكُمْ)

अर्थातःए मेरी क़ौम(समुदाय वाला)!इस **मुक़द्दस** (पवित्र) भूमि में प्रवेश करजाओ जो अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे नाम लिख दिया है।

मुक़द्दस का अर्थ हैःपवित्र।

3.बैतुलमक़दिस की एक विशेषता यह है कि अल्लाह तआ़ला ने अपने पैगंबर मूसा को आदेश दिया कि वहां के वासियों से युद्ध करें,जो कि लंबे शरीर वाले,कठोर स्वभाव,जालिम और बुत के पूजारी थे,और यह आदेश दिया कि बैतुलमक़दिस को उनके व्यवसा से मुक्त कराएं,इसमें एकेश्वरवाद का प्रचार.प्रसार करें और बहुदेववाद को वहां से दूर करें,मूसा ने अपनी क़ौम(समुदाय)से कहाः(يَا قَوْمِ ادْخُلُوا الْأَرْضَ الْمُقَدَّسَةَ الَّتِي كَتَبَ اللَّهُ لَكُمْ وَلَا تَرْتَدُّوا عَلَى أَدْبَارِكُمْ فَتَنْقَلِبُوا خَاسِرِينَ)

अर्थातःए मेरी क़ौम(समुदाय वालो!)इस **मुक़द्दस** (पवित्र) भूमि में प्रवेश करजाओ जो अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे नाम लिख दिया है और अपने पीठ की ओर न फिरो कि फिर हानी में पड़जाओ।

4.बैतलमक़्दिस की एक विशेषता यह है कि नबी सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें सूचना दी कि मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआ़ला से प्रार्थना की कि जब उनकी मृत्यु का समय आए तो उनको बैतुलमक़्दिस से एक पत्थर की मार की दूरी के बराबर निकट करदे ताकि उनकी मृत्यु उसी में हो,उसका कारण केवल यह था कि आप बैतुलमक़्दिस से प्रेम करते थे,इसका प्रमाण अबूहोरैरा रजीअल्लहु अंहु से वर्णित यह ह़दीस है कि जब मूसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु का समय आया तो आपने अल्लाहतआ़ला से दुआ की कि उनको बैतुलमक़्दिस से एक पत्थर की मार की दूरी के बराबर निकट करदे,यह मालूम सी बात है कि उस समय पवित्र पृथ्वी मुर्ति पुजारी अत्याचारी शासक के अंतर्गत थी,मूसा के हाथ में न था कि उसमें प्रवेश होजाएं ता कि वहीं अपकी मृत्यु हो,फिर भी उन्होंने जहां तक संभव हो सका उस पृथ्वी के निकट होने की इकक्षा प्रकट की,आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाःयदि में वहां होता तो तुम्हें उनकी क़ब्र दिखाता जो कि लाल टीले के पास रासते के निकट है।[1]

5.बैतुलमक़्दिस की एक विशेषता यह है कि जब यूषा बिन(पुत्र) नून ने बैतुलमक़्दिस के अत्याचारी कौ़म(समुदाय)से युद्ध करने का सोचा तो अल्लाह तआ़ला ने उनके लिए सूर्य को रोक दिया(अर्थात उसकी गतिविधि को रोक दिया),क्योंकि रात निकट होचुकी थी,आपके साथ आपकी सेना थी,तो आपने अल्लाह तआ़ला से प्रार्थना की कि सूर्य को(अस्त होने से)रोक दे ताकि अंधकार आने से पहले ही गांव में प्रवेश होकर अत्याचारी एवं तानाशाह कौ़म(समुदाय)से युद्ध कर सकें,तो अल्लाह ने उनकी प्रार्थना स्वीकार की और बैतुलमक़्दिस विजय होगया,अबूहोरैरा रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाःनिसंदेह सूर्य किसी मनूष्य के लिए कभी नहीं रोका गया,केवल यूषा बिन नून के,यह उन दिनों की बात है जब वे बैतुलमक़्दिस की ओर जारहे थे।[2]

6.बैतुलमक़्दिस की एक विशेषता यह है कि उसका विजय क़्यामत की पहचान है,औ़फ बिन मालिक से वर्णित है,आपने फरमाया कि में ग़ज़्वा तबूक के समय आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ,आप उस समय चमड़े के एक खीमें में थे।आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"क़्यामत की छे चिन्ह गिन लो,मेरी मृत्यु,फिर बैतुलमक़्दिस का विजय... "[3]

---

[1] (इसे बोखारीः1339 और मुस्लिमः2373 ने अबूहोरैरा रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है।)

[2] (इसे अह़मद 8315 ने अबूहोरैरा रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है और"अलमुसनद"के शोधकर्ताओं ने इसे सही़ कहा है।)

[3] (बोखारी 3176)

7.बैतलमक़दिस की एक विशेषता यह भी है कि काना दज्जाल इसमें प्रवेश नहीं होगा,बल्कि इसके निकट ही उसकी हत्या कर दी जाएगी,मसीह़ बिन मरयम अलैहिस्सलाम जब उसको बाबे लुद के निकट देखेंगे तो उसकी हत्या करदेंगे।[4]

8.बैतुलमक़दिस की एक विशेषता यह है कि काफिरों के सरदारों और उनके वरिष्ठ अगुआओं की हत्या फलसतीन के अंदर ही होगा,और दज्जाल को ईसा अलैहिस्सलाम के हाथों फलसतीन में एक युद्ध के दौरान हत्या किया जाएगा जो वास्तव में निर्णायक एवं जाति हत्या होगी,उसमें दज्जाल यहूदियों का नेता होगा,इस प्रकार ईसा अपनी सेना के साथ दज्जाल और उसकी सेना की हत्या करदेंगे,बल्कि उन समस्त ईसाइयों की हत्या करदेंगे जो उन पर वास्तव में ईमान नहीं लाऐंगे,अर्थात इस बात पर ईमान नहीं लाएंगे कि वह एक मनुष्य हैं जिनको(संदेशवाहक बना कर)भेजा गया है,वह ईसाइयों के सूअरों की भी हत्या करेंगे और उनकी उस सलीब को तोड़ डालेंगे जिस की वे पूजा करते हैं,यह सारी घटनाएं फलसतीन में घटींगी।[5]

9.बैतुलमक़दिस की एक विशेषता यह है कि अंत काल में ईसा मसीह़ बिन मरयम के नेतृत्व में जब मुसलमानों और यहूदियों के मध्य युद्ध होगी तो वृक्ष और पत्थर यहूदियों का हनन करेंगे,अबूहोरैरा रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"क़्यामत नहीं आएगी यहां तक कि मुसलमान यहूदियों के विरुद्ध युद्ध लड़ेंगे और मुसलमान उनकी हत्या करेंगे यहां तक कि यहूदी वृक्ष अथवा पत्थर के पीछे छिपेगा और पत्थर अथवा वृक्ष कहेगाःए मुसलमान!ए अल्लाह के बंदे!मेरे पीछे एक यहूदी है,आगे बढ़ और इसकी हत्या करदे,सेवाए ग़दक़द वृक्ष के(वह नहीं कहेगा)क्योंकि वह यहूदी का वृक्ष है"।[6]

10.बैतुलमक़दिस की एक विशेषता यह है कि इसके अंदर **मस्जिदे अक़सा** स्थित है,जो कि उन तीन मस्जिदों में से एक है जिनकी महानता क़ुरान एवं ह़दीस से प्रमाणित है,**इसकी महानता के अनेक कारण हैं**,**जिनमें दस महत्वपूर्ण कारण निम्नलिखित हैं**ः

प्रथम कारणःसल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम को मस्जिदे ह़राम से रात के समय मस्जिदे अक़सा तक ल जाया गया,फिर आपको आकाश(अर्थात मेराज की यात्रा)पर लेजाया गया,अल्लाह तआ़ला का कथन हैः(سُبْحَانَ الَّذِي أَسْرَى بِعَبْدِهِ لَيْلًا مِنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ إِلَى **الْمَسْجِدِ الْأَقْصَى**)

---

[4] (लुद,बैतुलमक़दिस के निकट एक स्थान है।)
[5] (देखेंःसही़ मुस्लिम में ह़ज़रत अबूहोरैरा रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित मसीह़ के नाज़िल होने और उनका दज्जाल की हत्या का घटनाः2897,इसी प्रकार ह़जरत जाबिर बिन अब्दुल्लाह अंसारी रजीअल्लाहु अंहु की ह़दीस भी देखेंः156,तथा ह़दीस संख्या2937 के अंतर्गत न्वास बिन समआ़न किलाबी रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित ह़दीस भी देखें।)
[6](इसे बोखारी 2936 और मुस्लिम 2922 ने वर्णित कया है और उपरोक्त शब्द मुस्लिम के हैं।)

अर्थात:पवित्र है वह अल्लाह तआ़ला जो अपने बंदे को रात ही रात में मस्जिदे ह़राम से मस्जिदे अक़सा तक लेगया।

फिर जब आप आकाश से लौटे तो मस्जिदे अक़सा की ओर लोटे,फिर वहां से मक्का गए,इस प्रकार आप दो बार मस्जिदे अक़सा से गुजरे जो कि उसकी महानता का प्रमाण है।

द्वितीय कारण: सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसरा की यात्रा के समय मेराज के बाद मस्जिदे अक़सा के अंदर समस्त नबयों की इमामत फरमाई,आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:"फिर नमाज़ का समय होगया तो मेंने उनकी इमामत की"।[7]

तृतीय कारण:मस्जिदे अक़सा की एक विशेषता यह है कि अल्लाह ने अपने नबी सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने उसे स्पष्ट कर दिया यहां तक कि आप(मक्का से ही)उसे देखने लगे,यह उस समय हुआ जब आपने बहुदेववादियों के सामने मस्जिदे अक़सा की यात्रा का उल्लेख किया तो उन्हों ने आपको झुटला दिया और आपको झुटलाने के लिए आपसे उसकी विशेषताएं पूछने लगे,क्योंकि उनको मालूम था कि आपने कभी मस्जिदे अक़सा की यात्रा नहीं की है,तो (उस समय)अल्लाह ने मस्जिदे अक़सा को आपके लिए ऊंचा कर दिया और आप उन बहुदेववादियों के समक्ष उसकी इमारत और एक एक चिन्ह बतलाने लगे,ह़ज़रत जाबिर रजीअल्लाहु अंहुमा से वर्णित है कि सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:"जब क़ोरैश ने मुझको मेराज की घटना को लेके झुटलाया तो में(काबा के)हजर स्थान में खड़ा होआ और अल्लाह ने पूरा बैतुलमक़दिस मेरे सामने कर दिया।में उसे देख कर उसकी एक एक पहचान बतलाने लगा"।[8]

चौथा कारण:मस्जिदे अक़सा की एक विशेषता यह है कि वह मुसलमानों का प्रथम क़िबला है,बरा बिन आ़ज़िब रजी़अल्लाहु अंहु फरमाते हैं:हमने सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ सोलह महीने अथवा सतरह महीने तक बैतुलमक़दिस की ओर नमाज़ पढ़ी फिर हमको काबे की ओर फैर दिया गया।[9]

पांचवा कारण:मस्जिदे अक़सा की एक विशेषता यह भी है कि वह उन मस्जिदों में से है जिनकी ओर प्रार्थना की नियत से यात्रा करना जाइज है,इसका प्रमाण सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह ह़दीस है:"कजावे केवल तीन ही मस्जिदों के लिए कसे जाएं:मस्जिदे

---

[7] (इसे मुस्लिम172 ने अबूहोरैरा रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित कया है।)

[8] (बोखारी 3886,मुस्लिम 170)

[9] (बोखारी 4492,मुस्लिम 525)

ह़राम,मस्जिदे अक़्सा और मेरी इस मस्जिदे(अर्थात मस्जिदे नबवी)के लिए"।[10]ज्ञात हुआ कि प्रार्थना करने की नियत से इन तीन मस्जिदों के एलावा संसार के किसी स्थान की यात्रा करना जाइज नहीं है।

छटा कारणःमस्जिदे अक़्सा की एक विशेषता यह है कि उसमें पढ़ी जाने वाली नमाज़(अन्य मस्जिदों में पढ़ी जाने वाली)250नमाजो़ं से श्रेष्ठतर है,अबूज़र रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है,वह फरमाते हैंःहम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास बैठे हुए थे कि उसी मध्य यह जिक्र छिड़ गया कि कोंसी मस्जिद अधिक श्रेष्ठतर है,मस्जिदे नबवी अथावा बैतुलमक़्दिस, सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाःमेरी इस मस्जिद(मस्जिदे नबवी)की एक नमाज़ मस्जिदे अक़्सा की चार नमाजो़ं से श्रेष्ठतर है,वह बड़ी सूक्ष्म मस्जिद है,निकट है कि(ऐसा युग आएगा जब)मनुष्य के पास घोड़े की लगाम के बराबर भी यदि पृथ्वी होगी जहां से वह मस्जिदे अक़्सा को देख सकेगा,तो वह उसके लिए पूरे संसार से बेहतर,अथवा फरमायाःसंसार और उसकी समस्त नेमतों से बेहतर होगी।[11]

अल्लाह के बंदो!चूंकि मस्जिदे नबवी में पढ़ी जाने वाली नमाज़ हजार नमाजो़ं से बेहतर है,इस लिए मस्जिदे अक़्सा में पढ़ी जाने वाली नमाज़ 250 नमाजो़ं से बेहतर है,क्योंकि वह मस्जिदे नबवी की नमाज़ की एक चौथाई के बराबर है।[12]

सातवां कारणःमस्जिदे अक़्सा की एक विशेषता यह है कि वह पृथ्वी पर निर्माण होने वाली दूसरी मस्जिद है,अबूज़र रजी़अल्लाहु अंहु फरमाते हैं कि मेंने पूछाः"या रसूल्लाह!पृथ्वी पर सर्वप्रथम कोंसी मस्जिद निर्माण की गई है?आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाःमस्जिदे ह़राम।उन्होंने पूछाःऔर उसके पश्चात?फरमाया कि मस्जिदे अक़्सा(बैतुलमक़्दिस)।मेंने पूछाःइन दोनों के निर्माण में कितने समय का अंतर रहा है?आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाःचालीस वर्ष का....."[13]

आठवां कारणःमस्जिदे अक़्सा की एक विशेषता यह है कि सोलेमान बिन दाऊद अलैहिमस्सलाम ने इसकी पुनःनिर्माण की,अल्लाह से प्रार्थना की कि जो व्यक्ति भी इसमें नमाज़ पढ़े,उसके पाप मिटादे,तो अल्लाह तआ़ला ने उनकी प्रार्थना को स्वीकार किया,अब्दुल्लाह बिन अम्र रजी़अल्लाहु अंहु से वर्णित है किः"सोलेमान बिन दाऊद अलैहिमस्सलाम ने जब

---

[10](इसे बोखारी 1995 और मुस्लिम 827 ने अबूसईद खुदरी रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित कया है,तथा बोखारी 1189 ने इसे अबूहोरैरा रजीअल्लाहु से वर्णित कया है।)

[11] (इसे तबरानी ने"अलऔसत"6983 में हा़किम ने "अलमुसतदरक"4509 में वर्णन किया है और उपरोक्त शब्द हा़किम के हैं,अल्बानी ने "तमामुलमिन्ना"पृष्ठ संख्याः294 में इसे सही़ह कहा है।)

[12](रही वह ह़दीस जो प्रसिद्ध है कि मस्जिदे अक़्सा की नमाज़ 500 नमाजो़ं से श्रेष्ठतर है,तो यह ह़दीस ज़ईफ है,देखेंः"तमामुलमिन्ना"शैख अल्बानी रही़महुल्लाह की पृष्ठ संख्या292)

[13](इसे बोखारी 3425 और मुस्लिम 520 ने वर्णित किया है और उपराक्त शब्द मुस्लिम के हैं)

बैतुलमक़दिस का निर्माण किया तो अल्लाह तआ़ला से तीन चीजें मांगी,अल्लाह से मांगा कि वह लोगों के मामलों के ऐसे निर्णय करें जो अल्लाह के निर्णय से मेल खाते हों,तो उन्हें यह चीज दी गई,तथा उन्होंने अल्लाह तआ़ला से ऐसा साशन मांगा जो उनके पश्चात किसी को न मिले,तो उन्हें यह भी प्रदान किया गया,और जिस समय वह मस्जिदे अक़सा का निर्माण से फारिग हुए तो उन्होंने अल्लाह तआ़ला से प्रार्थना की कि जो कोई इस मस्जिद में केवल नमाज़ के लिए आए तो उसे उसके पाप से ऐसे पवित्र करदे जैसे कि वह उस दिन था जिस दिन उसकी माता ने उसे जना"।[14]

नोवां कारणःसोलेमान से पूर्व भी अनेक पैगंबरों ने मस्जिदे अक़सा का पुनःनिर्माण किया,जैसे इब्राहीम और याकूब अलैहिमस्सलाम।

दसवां कारण: मस्जिदे अक़सा की एक विशेषता यह भी है कि जिस व्यक्ति ने उसे विजय किया वह ख़लीफा ऊ़मर बिन अलख़त्ताब रजी़अल्लाहु अंहु हैं,आपके शासन काल में इस्लामी सेना ने सहा़बी अबू ओ़बैदा बिन जर्राह़ के नेतृत्व में सन 636 इसवी में कुदस का घेराव कर लिया,घिराव के छे महीने बाद ईसाइयों के प्रमुख ने इस शर्त पर हथ्यार डाल दिया कि ऊ़मर बिन अलखत्ताब रजीअल्लाहु अंहु स्वयं यहां पधारें।

सन 16 हिजरी में ख़लीफा ऊ़मर ने कुदस की यात्रा किया ताकि शहर की चाभी प्राप्त कर सकें और शहर के इस्लामी देशों में शामिल होने की घोषणा करें,अतः ऐसा ही हुआ,आप उसी द्वार से मस्जिदे अक़सा में प्रवेश किए जिस द्वार से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेराज की रात प्रवेश किए थे,मेह़राबे दाऊ़द में तह़ियतुलमस्जिद पढ़ी,दूसरे दिन फजर की नमाज़ में मुसलमानों की इमामत की,प्रथम रकअ़त में सूरह(.....)का स्वसवरपाठ किया,द्वितीय रकअ़त में सूरह(बनी इसराईल)का स्वसवरपाठ किया,उसी **अव्सर** से ऊ़मर अनुबंध लिखा गया,जिसमें शाम के ईसाइयों से संबंधित ऊ़मर रजीअल्लाहु अंहु की शर्तें लिखे गए,उसमें उन अधिकारों का भी उल्लेख किए गए जो मुसलमानों की ओर से उन ईसाइयों को दिए जाएंगे जो इस्लामी शासन के अंतर्गत फलसतीन के अंदर निवास करेंगे,उनमें सर्वप्रथम अधिकार यह था कि मुसलमानों के देश में अमन व शांति एवं प्रतिष्ठा एवं सम्मान के साथ जीवन गूजारने के बदले वह मुसलमानों को जिज़या(कर)देंगे।[15]

---

[14](इसे अह़मद172/2 ने और नेसाई 693 ने अबूहोरैरा रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है और उपरोक्त शब्द नेसाई के हैं,अथवा अल्बानी रही़महुल्लाह ने इसे सह़ी कहा है।)

देखेंःअलबेदाया व अलनेहायाःवाके़आ़त सन 15 हिजरी[15]

- अल्लाह के बंदो!यह वे दस विशेषताएं हैं जिनसे अल्लाह ने बैतुलमक़दिस को सम्मानित किया है,इसके सम्मान एवं प्रतिष्ठा के लिए प्रत्येक मुस्लिम को चाहिए कि इन्हैं जानें और अपने संतान को उनकी शिक्षा दे,क्योंकि फलसतीन का विषय कोई सामग्री विषय नहीं है,बल्कि ऐसा विषय है जिसका संबंध आस्था से है,इस विषय में कोताही एवं लापरवाही बरतने से हमारे धर्मनिष्ठा को ठेंस पहुंचती है,इस धरती श्रेष्ठतर एवं उच्चतर राजाओं ने फलसतीन से(यहूदियों के अवैध)व्यवसाय को खत्म करने के लिए अंथक प्रयास कीं,क्तिू इस समय फलसतीन के संबंध से इस उम्मत के मजूसियों एवं ईरानी राफजीयों ने लालच का प्रदर्शन किया,जो कुदस की स्वतंत्रता के बैनर उठा कर मस्जिदे अक़सा तक पहुंचना चाहते हैं ताकि उसपर बहुदेववाद का ध्वज लहरा सकें,वहां अपने देश का कबज़ा जमा सके,काबा के रब की क़सम!यह अपमानित एवं परास्त हैं,क्योंकि फलसतीन को उमर और उनके पश्चात **सलाहुद्दीन** ने विजय किया था और इसको लाभ पहुंचाने का कार्य ऐसा व्यक्ति नहीं कर सकता जो उमर और **सलाहुद्दीन** को बुरा भला कहता हो!
- अल्लाह तआ़ला मुझे और आपको कुरान मजीद की बरकतों से माला माल करें,मुझे और आपको उसकी आयतों और नीतियों पर आधारित प्रामर्शों से लाभ पहुंचाए,में अपनी यह बात कहते हुए अपने लिए और आप सबके लिए प्रत्येक प्रकार के पापों से क्षमा प्राप्त करता हूं,आप भी उससे क्षमा प्राप्त करें,निसंदेह वह अति क्षमा करने वाला बड़ा कृपा करने वाला है।

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وكفى، وسلام على عباده الذين اصطفى، أما بعد:

ए मोमिनों!ए अल्लाह के बंदो!यहूदियों का दावा है कि चूंकि अल्लाह के नबी सोलेमान अलैहिस्सलाम ने मस्जिदे अक़सा का निर्माण किया था और वे उनही की संतान हैं,इसलिए वही मस्जिदे अक़सा के सबसे अधिक हकदार हैं,जब्कि यह बात सात कारणों से पूर्णरूप से असत्य हैः

- **प्रथम कारणः**सोलेमान अलैहिस्सलाम ने मस्जिदे अक़सा की स्थापना नहीं की था,बल्कि उसका पुनर्निर्माण किया था,उसकी स्थापना सोलेमान से बहुत पहले होचूकी थी,एक कथन के अनुसार आदम हलैहिस्सलाम ने उसकी स्थापना की और इसके अतिरिक्त भी अन्य कथन हैं।

द्वितीय कारणःमस्जिदे अक़्सा का पुनःनिर्माण भी सोलेमान से पूर्व अनेक पैगंबरों ने की,जैसे इब्राहीम और याकूब,उनके निर्माण का **उद्देश्य** था कि इसमें एकेशवरवादी बंदे अल्लाह की प्रार्थना करें,न कि वे यहूदियों का पूजा स्थल बन जाए।

- **तृतीय कारणः**सोलेमान अलैहिस्सलाम एकेशवरवादी थे,किंतु यहूदी अपने पैगंबरों के मार्ग पर न चल सके,बल्कि उनसे शत्रूता की,तौरैत और इंजील में हैरफैर करदिया,बनी इसरीईल के जमाने में ही यहूद अपने कुफर के कारण बनी इसराईल से अलग होगए,जैसे नूह़ अपने बेटे से अलग होगए,इब्राहीम अपने पिता आज़र से अलग होगए,और मोह़म्मद अपने चचा अबूलहब से अलग अलग होगए,कुफर मुसलमानों और काफिरों के बीच मित्रता और संबंध को खतम करदेता है,यही कारण है कि बनी इसराईल को जो श्रेष्ठताएं प्राप्त थीं,उनमें से कोई वरिष्ठता यहूदियों पर सत्य नहीं बैठता,उनके कुफर ने उन्हें इन श्रेष्ठताओं से वंचित करदिया है।
- **चौथा कारणः**यदि सोलेमान ने मस्जिद का निर्माण किया तो इसका यह मतलब नहीं कि वह अपने संतान एवं जाति के लिए उसके मालिक होगए,क्योंकि उन्होंने मस्जिद का पुनर्निर्माण इसलिए किया कि लोग उसमें नमाज़ पढ़ सकें,उन्हें इससे कोई मतलब नहीं था कि कोंसा वंश और जाती प्रजाति के लोग उसमें नमाज़ पढ़े,क्योंकि पैगंबरों की दावत वंश और जाती प्रजाति के लिए नहीं थी जैसा कि यहूदियों के हैरफैर किए हुए धर्म में है,बल्कि उनकी दावत एकेशवरवाद और धर्मनिष्ठा पर आधारित थी।
- **पांचवा कार**णः उमर रजीअल्लाहु अंहु ने जब बैतुलमक़दिस को विजय किया तो एक अनुबंध पत्र तैयार किया था जो उस समय से अबतक बरकरार है और मुसलमान उस पर स्थिर हैं और आगे भी उस पर जमें रहेंगे,वह यह कि फलसतीन मुसलमानों की संपत्ति रहेगा और उसपर उनही का साशन रहेगा,यहूदियों को वहां रहने की अनुमति होगी,इसके अतिरिक्त उनका फलसतीन पर कोई अधिकार नहीं होगा,तथा उनसे मुसलमानों के साशन एवं प्रशासन से लाभार्थी होने के बदले जिज्या़(कर)वसूला जाएगा।

छटा कारणः अल्लाह तआ़ला ने अपनी पुस्तक में यह निर्णय कर दिया है कि समस्त ○ भूमी उसकी है,वह अपने नेक बंदों को उसका वारिस बनाता हैः

(وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُورِ مِنْ بَعْدِ الذِّكْرِ أَنَّ الْأَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصَّالِحُونَ)

अर्थातःहम ज़बूर में प्रामर्श के बाद यह लिख चूके हैं कि पृथ्वी की विरासत मेरे नेक बंदे(ही)होंगे।

यह बात भी ढकी छुपी नहीं है कि नेक वही है जो इस्लाम धर्म के अनुयायी हो,और ○ यहूदी तो संदेशवाहकों के शत्रु और हत्यारे हैं,इब्ने ओसेमीन रही़महुल्लाह का निष्कर्ष है

कि:बनी इसराईल पवित्र भूमि के स्वाधिक पात्र हैं,यह उस समय के लिए था जब वे मोमिन थे,इसलिए नहीं कि वे बनी इसराईल(की जाती)से हैं,बल्कि इसलिए कि वे मोमिन हैं,इसमें कोई संदेह नहीं कि मूसा अलैहिस्सलाम के जमाने में वे पृथ्वी पर सर्वश्रेष्ठ लोग थे,अल्लाह का कथन है:

(وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُورِ مِنْ بَعْدِ الذِّكْرِ أَنَّ الْأَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصَّالِحُونَ)

अर्थात: अर्थात:हम ज़बूर में प्रामर्श के बाद यह लिख चूके हैं कि पृथ्वी की विरासत मेरे नेक बंदे(ही)होंगे।

तो जिस प्रकार अल्लाह तआ़ला ने बनी इसराईल को फिरओ़न के राज्य और उसके साशन का वारिस बनाया,इसी प्रकार मुसलमानों और मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने वालों को बनी इसराईल का उत्तराधिकारी बनाया।समाप्त[16]

- **सातवां कारण**:समान रूप से समस्त मस्जिदों और विशेष रूप से तीन मस्जिदों पर मोमिनों को संरक्षण प्राप्त होगी,न कि काफिरों को,अल्लाह का कथन है:

(مَا كَانَ لِلْمُشْـرِكِينَ أَنْ يَعْمُرُوا مَسَـاجِدَ اللَّهِ شَـاهِدِينَ عَلَى أَنْفُسِـهِمْ بِالْكُفْرِ أُولَئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ وَفِي النَّارِ هُمْ خَالِدُونَ*إِنَّمَا يَعْمُرُ مَسَاجِدَ اللَّهِ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَآتَى الزَّكَاةَ وَلَمْ يَخْشَ إِلَّا اللَّهَ)

अर्थात:बहुदेववादियों के लिए यह योग्य नहीं कि वे मस्जिदों को आबाद करें।इस स्थिती में कि वे स्वयं आपने कुफर के आप साक्षी हैं,उनके आ़माल नष्ट हैं,अल्लाह की मस्जिदों की रौनक व आबादी उनके हिस्से में है जो अल्लाह पर और क़्यामत के दिन पर ईमान रखते हों,नमाजो़ के पाबंद हों,जकात देते हों,अल्लाह के सेवा किसी से न डरते हों।

- ए अल्लाह के बंदो!अल्लाह तआ़ला ने सजदा करने वाली पेशानियों,एकेशवरवादी दिलों,वजू़ किए हुए हाथों और सत्य बोलने वाली जीभों से सहायता एवं विजय का वादा किया है,अल्लाह तआ़ला अपने वादे में सच्चा है,वह वादे का उल्लंघन नहीं करता,अल्लाह तआ़ला का कथन है:

---

[16](आप रहि़महुल्लाह का कथन देखें:सूरह माइदा की तफसीर में इस आयत की तफसीर: يا قوم)
(ادخلوا الأرض المقدسة التي كتب الله لكم)

(وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْأَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِينَهُمُ الَّذِي ارْتَضَى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِنْ بَعْدِ خَوْفِهِمْ أَمْنًا يَعْبُدُونَنِي لَا يُشْرِكُونَ بِي شَيْئًا وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذَلِكَ فَأُولَئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ)

अर्थातः तुम में से उन लोगों से जो ईमान लाए हैं और नेक कार्य किए हैं अल्लाह तआ़ला वादा फरमाचुका है कि उन्हें अवश्य पृथ्वी पर खलीफा बनाएगा जैसे कि उन लोगों को खलीफा बनाया था जो उनसे पूर्व थे और निसंदेह उनके लिए इस धर्म को शक्ती के साथ ठोस करके जमादेगा जिसे उनके लिए वह पसंद फरमा चूका है और उनके इस डर को वह शांति से बदल देगा,वे मेरी पूजा करेंगे।मेरे साथ किसी को भी साझी न बनाएंगे।उसके पश्चात भी जो लोग नाशुकरी और कुफर करें वे निसंदेह फासिक हैं।

- आप यह भी जान लें-अल्लाह आप पर कृपा करे-कि अल्लाह तआ़ला ने आप को एक बड़ी चीज का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन हैः

(إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا)

अर्थातः अल्लाह तआ़ला और उसके देवदूत उस नबी पर रह़मत भेजते हैं,ए ईमान वालो!तुम भी उन पर दरूद भेजो और अधिक सलाम भी भेजते रहा करो।

हे अल्लाह! तू अपने दास एवं संदेशवाहक मोह़म्माद पर रह़मत एवं शांति भेज,तू उनके उत्तराधिकारियों,अनुयाईयों और क़ेयामत तक नेकनीयती के साथ उनका अनुगमन करने वालों से प्रसन्न होजा।

हे अल्लाह! इसलाम और मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर,बहूदेववाद एवं बहूदेववादियों को अपमानित कर,तू अपने और इस्लाम धर्म के शत्रुओं को नष्ट करदे,और अपने एकेश्वरवादी बंदों की सहायता फरमा।

हे अल्लाह तू हमें हमारे देशों में शांति प्रदान कर,हमारे इमामों और हमारे हाकिमों को सुधार दे,उन्हें हिदायत का निदेशक और हिदायत पर चलने वाला बना।

हे अल्लाह! समस्त मुस्लिम शासकों को अपनी पुस्तक को लागू करने,अपने धर्म को उच्च करने की तौफीक प्रदान कर और उन्हें अपने प्रजाओं के लिए रह़मत का कारण बना।

- हे अल्लाह!निसंदेह यहूदी सरकशी एवं विदरोही कर रहे हैं,वे पृथ्वी अत्यंत बिगाड़ फैलारहे हैं,हे अल्लाह!उन्होंने पैगंबरों की भी हत्या की है,देशों पर कबजा जमाया है,धन दोलत को लूट खाया है,हे अल्लाह!तू उनपर यातना एवं महामारी भेजदे,हे

अल्लाह!उनके दिलों में डर डालदे,हे अल्लाह!हम तुझसे शिकायत करते हैं,तुझ पर ही भरोसा करते हैं,तेरे बेगैर हमारी कोई शक्ति नहीं,हे अल्लाह!मस्जिदे अक़्सा को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर,उसे यहूदियों की गंदगी से पवित्र करदे।

- سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين.

लेखकः

मजिद बिन सुलेमान अलरसी

९शौवाल **१४४२**हि़जरी

जूबैल,**सऊदी**अ़रब

००९६६५०५९०६७६१

अनुवादः

फैजुर रह़मान हि़फजुर रह़मान तैमी